18.0 जे. कृष्णमूर्ति का शैक्षिक अवदान

- **डॉ.ममता सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, डी.बी.एस.कालेज, कानपुर
  ई.मेल- mamtasinghdbs@gmail.com

शोध-सारांश

शिक्षा को मानवीय मूल्यों के विकास में एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त माध्यम माना जाता है। वर्तमान समय में विश्व सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक संकटों के दुष्प्रभाव से ग्रस्त है। आज मनुष्य देशकाल, जाति, सम्प्रदाय एवं अन्य प्रकार की इकाईयों में विभाजित होकर अपने चारो ओर वैचारिक मतभेदों तथा वैमनस्यता की खाई चौड़ी करने में लगा है। ऐसी स्थिति में मानवीय मूल्यों की उपादेयता बढ़ जाती है। सभी विचारकों एवं दार्शनिकों ने जीवन की सार्थकता के लिए मानवीय मूल्यों की अनिवार्यता को स्वीकार किया है। मानववादी चिन्तकों में एक प्रमुख नाम आधुनिक भारतीय चिन्तक एवं विचारक जे0 कृष्णमूर्ति का है। मनुष्य का समग्र अन्तर बाह्य प्रस्फुटन जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा के केन्द्र में है। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने प्रारम्भ से ही बच्चों की सम्यक एवं समग्र शिक्षा पर विशेष बल दिया। अपने स्वयं के जीवन में जो कुछ महसूस किया वही अनुभव उनका दार्शनिक चिन्तन बना। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में जे0 कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिन्तन सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डाला गया है जो वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के समाधान में अत्यधिक उपयोगी एवं प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द - जे. कृष्णमूर्ति, मानव मूल्य, शिक्षा एवं समाज

जे. कृष्णमूर्ति एक क्रान्तिकारी विचारक एवं आध्यात्मिक सन्त थे। उन्होंने प्रत्येक प्रकार की वाह्य प्रामाणिकता का विरोध किया चाहे वह व्यक्ति, परम्परा या पुस्तक हो। इनके अनुसार हमें बाह्य प्रामाणिकता के द्वारा सत्य या यथार्थ का ज्ञान नहीं हो सकता। इसके लिए हमें स्वयं प्रयास करना होगा। जे. कृष्णमूर्ति के चिन्तन का केन्द्र मानव एवं उसका मन है। मानव मन को अपेक्षित स्थिति एवं गति देना निश्चित ही ऐसे गुणों एवं मूल्यों का एक समुदाय होता है, जो उसे अनपेक्षित और अश्रेयस्कर दिशाओं में जाने से बचाने के साथ-साथ कल्याणकर निष्कर्षों तक पहुँचने में सहायता प्रदान करता है। इन मूल्यों को ही हम मनोवैज्ञानिक मूल्य कहते हैं। मानव मूल्यों का प्रयोजन जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार मन का अखण्ड होना या निरूपाधिक होना है। ऐसा मन जो क्लेश या उपाधियों से रहित हो, मन का अपनी संस्कारबद्धता से मुक्त होना ही पुरुषार्थ है।

जे. कृष्णमूर्ति अपने वार्ताओं तथा विचार विमर्शों से अपनी शिक्षाओं को बच्चों तक पहुँचाते हैं। मानव मन के मूलभूत परिवर्तनों से तथा एक नवीन संस्कृति के सर्जन में जो केन्द्रीभूत है उसके सम्प्रेषण के लिए शिक्षा को जे. कृष्णमूर्ति प्राथमिक महत्व को मानते हैं। ऐसा परिवर्तन तभी सम्भव है जब बच्चों की विभिन्न प्रकार की कार्यकुशलता तथा विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उन्हें स्वयं अपनी विचारण तथा क्रियाशीलता के प्रति जागरुक होने की क्षमता भी प्रदान की जाती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली बच्चों के जन्मजात गुणों जैसे अवलोकन, विचार अभिव्यक्ति इत्यादि को नष्ट कर रही है तथा एक खण्डित व्यक्ति का निर्माण कर रही है। यह विखण्डन युवाओं में गलत मूल्यों, धन प्राप्ति, शक्ति प्रतिष्ठा आदि को बढ़ावा दे रही है। शिक्षा न केवल आर्थिक लाभ का साधन है बल्कि समझ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और क्षमता की खेती के माध्यम से स्वतन्त्रता, निर्भयता एवं सशक्तिकरण को भी सक्षम बनाती है।

आज टेक्नॉलाजी युग है। छात्रों के साथ-साथ अभिभावक भी टेक्निकल ज्ञान की सूचनाओं पर अधिक जोर देते हैं। जिससे बालक शीघ्र ही इस मशीनीकरण परिवेश का अंग बन सके। इससे बालक चतुर एवं नौकरी प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है। परन्तु बालक का पूर्णरूपेण विकास नहीं हो पाता है। हमारी शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। ऐसे मनुष्यों का निर्माण करना है जिसमें आन्तरिक बोध हो, परीक्षा तथा उससे परे जाने की क्षमता हो। वर्तमान आधुनिक समय में स्पष्टता एवं कार्यकुशलता से कार्य करने के लिए तकनीकी दक्ष होना आवश्यक है। परन्तु इससे भी आवश्यक ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जहाँ बालक पूर्ण मनुष्य के रूप में विकसित हो सके। वह वस्तुओं, विचारों एवं व्यक्तियों के साथ समस्त जीवन के साथ सम्बन्धित हो सके।

वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता:

वर्तमान समय में प्रत्येक राष्ट्र विकास के पथ पर दौड़ने के लिए प्रयासरत है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा सामाजिक जीवन को चलाने के लिए कुछ प्रमुख मूल्यों एवं सिद्धान्तों की आवश्यकता होती है। समाज तथा उसका बड़ा स्वरूप राष्ट्र की संरचना विशेषकर मूल्यों के आधार पर निर्भर करती है। आज भारतीय समाज में भौतिक मूल्यों एवं अर्थ की प्रधानता है। नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों से लोगों का विश्वास उठ गया है। वर्तमान में मूल्यों के अवमूल्यन के कारण पूरी शिक्षा प्रणाली अवमूल्यित हो रही हैं मनुष्य शिक्षित हो जाने के पश्चात भी व्यावहारिक रूप से पशुवत आचरण करता है। वर्तमान शिक्षा मनुष्य का बौद्धिक विकास तो कर रही है परन्तु व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने में असमर्थ सिद्ध हो रही है। परिवेश सम्बन्धी संकट, निर्धनता, भूख एवं हिंसा मनुष्य को बाध्य कर रही है कि वह इन स्थितियों की वास्तविकता को समझे। अतः शिक्षा की आधारभूत धारणाओं के प्रति भी एक नवीन दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में जे0 कृष्णमूर्ति के चिन्तन की प्रमाणिकता बढ़ जाती है। इनके चिन्तन में समन्वयकारी दृष्टिकोण, आत्मबोध करने वाली शिक्षा, व्यक्ति एवं समाज के मध्य उचित सम्बन्ध का सम्वर्द्धन समाहित है। कृष्णमूर्ति ने मन को उसकी बेड़ियों, संस्कारबद्धता से मुक्त कराने सम्बन्धी क्रान्तिकारी विचार हमारे समक्ष प्रस्तुत किया जो अत्यन्त प्रासंगिक है। इनके शैक्षिक चिन्तन को अपने जीवन में उतार कर समाज में व्याप्त समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

शिक्षा दर्शन:

शिक्षा का अर्थ: जे.कृष्णमूर्ति के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य को आत्मज्ञान कराये। जे. कृष्णमूर्ति परीक्षा उत्तीर्ण करने, तथ्यो को रटने और उपाधियाँ प्राप्त करने को शिक्षा नहीं मानते थे। इनकी दृष्टि से यह शिक्षा का एक पक्ष है, जो उसे केवल रोजी-रोटी कमाने योग्य बनाता है। इनके अनुसार ''शिक्षा द्वारा ही मनुष्य को जीवन का सही अर्थ समझाया जा सकता है और शिक्षा द्वारा ही उसे अनुचित मार्ग से सन्मार्ग पर लाया जा सकता है।''

शिक्षा के उद्देश्य: जे.कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का मूल्य उद्देश्य संतुलित मानव का विकास करना है। एक ऐसा मानव जो जीवन के उद्देश्य समझता हो, जिसमें चेतना, सद्भावना जैसे गुणों का भण्डार हो वह द्वेष, घृणा, हिंसा, जाति, धर्म सम्प्रदाय आदि दुष्प्रवृत्तियों से दूर हो। इनका चिन्तन देश, परिस्थिति एवं सांस्कृतिक विषमताओं की सीमा से परे मानवता की सहायता करता है। शिक्षा के मूल उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति आवश्यक है:-

एक व्यक्ति का सामाजिक विकास होने के कारण वह समाज का अंग होता है। समाज के सभी लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। समाज में प्रत्येक व्यक्ति को सेवा प्रदान करना ही व्यक्ति का कर्तव्य होता है।

शिक्षा का उद्देश्य बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास में समन्वय स्थापित करना था। स्वस्थ मन के लिए स्वस्थ शरीर का होना अति आवश्यक है। स्वस्थ शरीर एवं मन के द्वारा बालक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर नवीन एवं वैज्ञानिक अविष्कार कर सकेगा।

बालक में आध्यात्मिक चेतना, आत्मज्ञान और नैतिक मूल्यों का विकास करना भी उनका उद्देश्य था। आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति आन्तरिक स्वतन्त्रता, शान्ति, आत्मानुशासन, धैर्य एवं ज्ञान के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीविका के लिए कोई न कोई व्यवसाय अवश्य करना पड़ता है। अतः शिक्षा द्वारा उन्हें किसी न किसी व्यवसाय में प्रशिक्षित करना आवश्यक मानते थे।

बालक में सृजनात्मकता का होना अति आवश्यक है। अतः शिक्षा का उद्देश्य बालक में सृजनात्मकता का विकास कर उसमें स्वयं निर्णय लेने और कार्य को रचनात्मक बनाने की स्वतन्त्रता का विकास करना था। सृजनात्मकता से अभिप्राय तन-मन और आत्मा की सृजनशीलता से था।

जे. कृष्णमूर्ति जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक को संवेदनशील बनाना था। इनकी दृष्टि में प्रकृति एवं मानव मात्र के प्रति प्रेम उत्पन्न करना ही सच्ची संवेदनशीलता है। ऐसी संवेदनशीलता में घृणा, द्वेष, क्रोध एवं हिंसा का कोई स्थान नहीं होगा, बच्चे भय एवं प्रतिस्पर्द्धा से मुक्त होंगे।

पाठ्यचर्या: पाठ्यचर्या में भौतिक ज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा हेतु विज्ञान एवं तकनीकी जीवन यापन हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण और सौन्दर्यबोध एवं सृजनात्कता के विकास के लिए कला, संगीत, रचनात्मकता का पाठ्यचर्या में स्थान होना चाहिए।

शिक्षण विधि: जे0 कृष्णमूर्ति शिक्षा में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को भागीदारी बताया। शिक्षण चाहे जिस विधि से किया जाये परन्तु उसमें ध्यान, श्रवण और भयमुक्त वातावरण का स्थान सर्वोपरि होना चाहिए। निरीक्षण, परीक्षण, अनुभव और स्वाध्याय पर भी बहुत बल दो चाहिए।

पाठ्यक्रम: जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा में पाठ्यक्रम इस प्रकार का होना चाहिए कि उसका उपयोग छात्रों के व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जीवन में हो सके। जैसे गणित एवं विज्ञान आदि। आध्यात्मिक विकास के लिए तथा आत्मज्ञान के लिए भी आध्यात्मिक विषयों का समावेश करना चाहिए। नैतिक गुणों के विकास के लिए नैतिक शिक्षा आदि विषयों को शाि◌ामल किया जाये।

अनुशासन: जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार अनुशासन के लिए दण्ड या नियन्त्रण की आवश्यकता नहीं होती। किसी भी व्यक्ति के किसी भी प्रकार की स्थिति पर इसका अधिकार है जिससे कि वह नियम के विरुद्ध जाने का प्रयास न कर सके। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में बुद्धि एवं ज्ञान का विकास होता है। शिक्षा ही वह प्रमुख उपकरण है जो बालक के मानवीय व्यवहार एवं नैतिक मूल्यों के विकास में सहयोग प्रदान करता है। अतः जे.कृष्णमूर्ति व्यक्ति की स्वअनुशासी या आत्मानुशासन के पक्षधर थे। कृष्णमूर्ति के शब्दों में शिक्षा का हमे अयान्त्रिक एवं समझदार होने में सहायक होना चाहिए। शिक्षा को वर्तमान जीवन की पूर्ण चेतना प्रदान करना चाहिए। उसे हमें भूत और भविष्य के विचारों से स्वतन्त्र वर्तमान पूर्णतया स्वतन्त्र बौद्धिक जीवन व्यतीत करने में सहायता करनी चाहिए।

शिक्षक: जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार बालक का पूर्ण सर्वांगीण विकास करना एक शिक्षक का कर्तव्य है। शिक्षक अपनी समस्त शक्ति को बालक के जागरण प्रबोध एवं उसकी आन्तरिक शक्ति को जानने में लगा दे। छात्र के साथ आत्मीय सम्बन्ध रखे, जिससे वे निर्भय होकर सीख सके। आज की शिक्षा प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा, महत्वाकांक्षा एवं वाह्य सम्पन्नता का संवर्धन करने के आधार पर विकसित की जा रही है। शिक्षकों को चाहिए कि इस प्रकार की शिक्षा के विनाशकारी परिणामों एवं प्रभावों को समझे तथा इसके होने वाले दुष्परिणामों से बचाने की कोशिश करे। एक शिक्षक का कर्तव्य है कि वह बालक में स्वतन्त्रता एवं संवेदनशीलता आदि गुणों का विकास करे। शिक्षक छात्र को भयमुक्त करे। वह छात्रां◌े में ऐसी योग्यता का समावेश करे जिससे छात्र भय उत्पन्न

होने वाले कारणों को जान सके। शिक्षक को विद्यार्थी की प्रज्ञा, सर्जनात्मक शक्ति एवं समस्त व्यक्तित्व के विकास में सहायक होना चाहिए। शिक्षण संस्थाओं में शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह एक ऐसी नयी पीढ़ी का निर्माण करे जिससे मनुष्य अहंकार केन्द्रित क्रिया से मुक्त हो तथा आन्तरिक एवं वाह्य दोनों प्रकार के सद्गुणों से सम्पन्न हो सके।

शिक्षार्थी: कृष्णमूर्ति बालकों के व्यक्तित्व का आदर करते थे। उनकी चेतना के विकास पर बल देते थे, जिससे वे स्वयं नियम, सिद्धान्त एवं मूल्यों का चयन करने योग्य बने। वे बालकों पर नियम, सिद्धान्त या मूल्य थोपने का विरोध करते थे। छात्र असाधारण रूप से समीक्षक बने। वे कहते हैं कि समग्र अवलोकन के लिए भीतर क्या-क्या घटित हो रहा है उसी रूप में समझें, जो दूसरो ने कहा केवल उसका अनुसरण न करे बल्कि अपना प्रकाश स्वयं बनें। प्रकृति से एकात्म सम्बन्ध बना सके, संवेदनशील बन सकें एवं सही देख सकें। यह सभी शिक्षा के अंग हैं। छात्र व शिक्षक के मध्य प्रेम का सम्बन्ध स्थापित हो जिससे छात्र आत्मनिर्भर होकर जीवन के मूल स्वरूप का अवलोकन कर सके। स्वयं को जानना, स्वयं के व्यवहार का निरीक्षण करना, हृदय में प्रेम, स्नेह, उदारता, कल्पना, सौम्यता, शान्ति, कोमलता, सहृदयता का समावेश करना छात्रों का मूल दायित्व है। ऐसा जागरुक छात्र अहं से मुक्त होकर सरल, संवेदनशील बन अपने समग्र व्यक्तित्व का विकास करता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव: जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक उद्देश्यों में आध्यात्मिकता एवं व्यावहारिकता दोनों का समावेश है। इनके शिक्षा दर्शन के अनुसार वास्तविक शिक्षा को न केवल ज्ञानार्जन के योग्य बनाना है बल्कि संसार की ओर वस्तुगत तरीके से देखना सिखाना है। जिससे हम अनेक सामाजिक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं तथा हमारा समग्र विकास हो सकता है। इन्होंने शिक्षित व्यक्ति को अपने बुद्धि के अनुसार विचार करने, पूर्ण स्वतंत्रता से कार्य करने तथा किसी भी विचारधारा का अन्धानुकरण न करने की बात किया। वर्तमान में इसका प्रयोग बालकों के अन्धानुकरण करने की प्रवृत्ति को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। इन्होंने स्व-अनुशासन, स्वाध्याय एवं आत्मचिन्तन पर विचार कर बालकों में जागरुकता लाने का प्रयास किया। इसके साथ ही विद्यार्थियों में सृजनशीलता विकसित करने का प्रयास भी किया। विचारों के भटकाव के कारणों का निदान कर उनको स्थिर करने के विचार द्वारा छात्रों की स्वतः चिन्तन को जागृत कर सकते हैं। शिक्षक के ईमानदार व कर्मनिष्ठ होने का विचार वर्तमान समाज के लिए भी उपयोगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप एवं निगम शिवानी (2016). शिक्षा के दार्शनिक परिदृश्य, आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ, पृ0-412,
त्यागी, गुरुसरन दास एवं सिंह, डॉ0 बसन्त (2020). शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ0-201
कृष्णमूर्ति, जे0 (1997). ध्यान में मन. जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
कृष्णमूर्ति, जे0 (2003). जीवन की पुस्तक. जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
विश्वकर्मा, एम0 आर0 (1995). जे0 कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन. प्रज्ञा एवं दिव्या प्रकाशन, वाराणसी।
कृष्णमूर्ति, जे0 (2004). फ्रीडम का क्या मतलब होता है?. जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, चेन्नई।
कृष्णमूर्ति, जे0 (2007). रिश्ते खुद के लिए, दूसरों के लिए, दुनिया के लिए. जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन, कैलिफोर्निया, अमेरिका।
कृष्णमूर्ति, जे0 (2004). मानवता का भविष्य. जे0 कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी